ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

सिन्धु सभ्यता–अनसुलझे प्रश्न

ई0 मृगेन्द्र कुमार अनिल
उपाध्यक्ष
ब्रह्मावर्त रिसर्च, इस्टीट्यूट
सहायक अभियन्ता
लो0 नि0 वि0 उत्तर प्रदे" ा

सिन्धु घाटी की सभ्यता पर अनेक लेख लिखे गये है जिसमें 1931 में जान मार्शल का चित्र युक्त ''मोहनजोदड़ों एंड द इंडस सिविलाइजेशन'' प्रमुख है। इसमें उनके नेतृत्व में हुई मोहनजोदड़ों की खुदाई से प्राप्त सामग्री की उनके तथा सहयोगी विद्वानों द्वारा की गयी विस्तार पूर्वक विवेचनाओं का वर्णन है। समकालीन मकाई द्वारा ''फर्दर एक्सकवेशन ऐट मोहनजोदड़ों'' तथा वत्स द्वारा ''एक्सकावेशन्स एट हड़प्पा'' भी प्राप्त सामग्री की विस्तृत विवेचना प्रस्तुत करती है। इसके अतिरिक्त नवीनतम खोजों के आधार पर ब्रजवासी लाल की द अर्लीएस्ट सिविलाइजेशन ऑफ साउथ एशिया, ग्रेगरी फेरसेहत की एं" ाएन्ट सिरीज आफ द इडंस जॉनधन आके फेल्केट की एं" ाएन्ट सिटीज ऑफ द इंडस सिविलाइजेशन, जिगर का प्री हिस्टोरिक इंडिया, गार्डन चाइल्ड का न्यू लाइट ऑन द मोस्ट एंशेट ईस्ट, विजेट तथा रेमक अल्विन का बर्थ ऑफ इंडियन सिविलाइजेशन तथा गार्डन चाइल्ड का न्यू लाइट ऑफ मोस्ट एं" ाएन्ट ईस्ट'' इत्यादि अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

1921 तक मेसोपोटामिया और मिश्र के प्राचीन नगरों और बहुमूल्य सामग्री मिलने पर विश्व में उन्हें नगर सभ्यताओं के जन्म दाता के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है, परन्तु पुरा ऐतिहासिक संस्कृतिक का केन्द्र सन् 1921 ई0 तथा सन् 1922 ई0 की खुदाई के पश्चात् रायबहादुर दयाराम साहनी और राखलदास द्वारा उद्बोधित जानकारी से अतिप्राचोन संस्कृति व सभ्यता की जानकारी विश्व पटल पर आयी, जो भारतीय संस्कृति की गौरवशाली इतिहास का व्याख्यान कर रही थी। कालान्तर में नन्दी गोपाल और भारत स्टाइन द्वारा सिंध क्षेत्र बलूचिस्तान तथा गेड्रोशिया क्षेत्रों में किये गये सर्वेक्षण तथा उत्खनन से अनेक सिंध सभ्यता से जुड़े स्थलो का पता चला। अब तक किये गये उत्खननों से प्राप्त जानकारी के अनुसार भारत में प्रारम्भिक सिन्धु सभ्यता के 179 स्थल विकसित सिन्धु सभ्यता के 570 तथा परवर्ती सिन्धु सभ्यता के 980 स्थलों का पता लगाया जा चुका है। पाकिस्तान में प्रारम्भिक संस्कृति के 297 विकसित सिन्धु सभ्यता के 317 तथा परवर्ती सिन्धु सभ्यता के 71 स्थलों का भी पता चला है। इस स्थान का

विस्तार पूर्व में आलमगीर से पश्चिम ने सुत्काडोगोर तक तथा उत्तर में जम्मू से लेकर दाइमावाद तक है।

इस विषय में बड़ा ही मतभेद है कि सिन्धु सभ्यता के जनक कौन थे। विद्वानों ने सभ्यता के मुख्य तत्वों मृदभाण्ड, निश्चित माप की पक्की ईटे, लिपि, मुद्राए, मानक तौल पर आधारित माप और बॉट, नगर विन्यास की योजना, नालियों का प्रबन्ध आदि पर विचार करते हुए, एक मत सिन्धु संस्कृति का उद्भव मेसोपोटामिया की संस्कृति को देते है, दूसरा ईरानी–अलूची–सिंध और भारत की अन्य ग्रामीण संस्कृतियों से इस विकसित हुआ मानते है।

मेसोपोटामिया से इस सभ्यता से समाप्त होने के पक्ष में व्हीलर ने तार्किक तौर पर अन्नागारों और गढ़ी क निर्माण में प्रयुक्त चिनाई तथा लकड़ी की शहतीरों के समान प्रयोग को स्वीकार किया है। वही गार्डन ने अनुमान के आधार पर कहा है कि मेसोपोटामिया के लोग समुद्री रास्ते से समुद्र किनारे–2 होकर आये। सांकलिया, ने बलूचिस्तान के स्थलों पर पाये जाने वाले आयताकार/वर्गाकार चबूतरों को जिगुरेट से तुलना के आधार पर सिन्धु घाटी की सभ्यता पर मेसोपोटामिया के प्रभाव को स्वीकार करते है। कई विद्वान सिन्धु सभ्यता पर मेसोपोटामिया के प्रभाव को नकारते हुए प्रबल तर्क देते है। एक तर्क यह भी है कि मेसोपोटामिया वाले इस सभ्यता के जनक थे तो उनकी लिपि और सिंधु सभ्यता की लिपि में इतनी भिन्नता क्यों ? इस सम्बन्ध में कोई भी विद्वान सही सही उत्तर देने में सक्षम नहीं रहे। यहां पर यह उल्लेख करना भी उचित होगा कि हड़प्पा लिपि में तीन सौ से कुछ अधिक चिन्ह जबकि मेसोपोटामिया की कीलावार लिपि में लगभग नौ सौ चिन्ह है। सिन्धु घाटी और मेसोपोटामिया की संस्कृतियों में कई मूलभूत अन्तर भी है। सिन्धु सभ्यता में नगर विमोचन एवं सार्वजनिक स्वच्छता व्यवस्था मेसोपोटामिया व अन्य सभ्यताओं से भी श्रेष्ठ मानी गयी है। यदि यह सभ्यता मेसोपोटामिया से ली गयी होती तो कम से कम प्रारम्भिक चरण तो उसी अनुरूप में होता। नाप तौल में एक समान होती, परन्तु ऐसा नहीं है। सिन्धु सभ्यता में भौतिक वस्तुओं में भी मेसोपोटामिया से कोई समानता नहीं है। दोनों की लिपियों में पर्याप्त अन्तर है। सिन्धु सभ्यता की जो वस्तुए मेसोपोटामिया से तथा मेसोपोटामिया की जो वस्तुए सिन्धु सभ्यता से प्राप्त हुयी है वह केवल परस्पर आदान–प्रदान, व्यापार–वाणिज्य की ही सूचक हो सकती है।

इन्हें एक ही क्षेत्र की संस्कृति का उद्गम स्थल सिद्ध करने के लिए निश्चित प्रमाण नहीं है। यह भी उल्लेखनीय है कि सिन्धु सभ्यता के समकालीन मेसोपोटामिया के पक्की ईंटों का प्रयोग अपेक्षाकृत बहुत कम हुआ है। सिन्धु सभ्यता में गारे के रूप में मिट्टी का मुख्य रूप से प्रयोग हुआ जिप्सम के मिश्रण का प्रयोग केवल नालियों की जुड़ाई में प्रयोग मिलता है जहां पर निरन्तर पानी के बहाव के कारण चिनाई को मजबूत बनाने की आवश्यकता थी। मोहनजोदड़ों के विशाल स्नानागार के निर्माण में गिरिपुष्पक का प्रयोग भी अनूठा है। इसके अतिरिक्त केवल प्राचीन मिश्र में ही चूने का प्रयोग करने की तरह तथा रोमन काल में प्लास्टर के लिये किया जाता था।

मोहनजोदड़ा और हड़प्पा के भवनों में स्तम्भों का प्रयोग कम हुआ है। गोल स्तम्भ सिन्धु सभ्यता में अनुपलब्ध है जबकि इस तरह के स्तम्भ मेसोपोटामिया की सभ्यता में लोकप्रिय थे। सुमेरी सभ्यता में अर्द्धवृत्ताकार स्तम्भों का निर्माण होता था। प्राचीन सभ्यताओं में निकास नाली का अत्यधिक सुन्दरता से प्रयोग किया गया है। अन्य समकालीन सभ्यताओं में ऐसा प्रयोग देखने को नहीं मिलता है।

लोथल की खुदाई से जानकारी प्राप्त होती है कि सार्वजनिक नाली का निर्माण कार्य विभिन्न घरों की नालियों को आपस में बहुत ही सफाई चूने का प्रयोग करते हुए जोड़ा गया है। ईंट एक दूसरे से बिल्कुल सटाकर जोड़ी गयी है।

सिन्धु सभ्यता की कुछ मोहरे अपनी कलात्मकता के लिए विख्यात है यही अपवाद स्वरूप हड़प्पा तथा मोहनजोदड़ों से प्राप्त पाषाण मूर्तिया तथा मिट्टी की बैल की आकृति उस काल की उन्नत कलात्मकता को दशाता है। मूर्तियों की संख्या कम है। परन्तु यह निश्चित है कि उस काल के कलाकारों में सौन्दर्य सृष्टि की पर्याप्त क्षमता विद्यमान थी।

मोहनजोदड़ों से प्राप्त लखड़ी पत्थर की एक खंडित मानक प्रतिमा मिली है। इस आकृति में नेत्र कुछ लम्बे तथा अधखुले, दृष्टि ध्यान मुद्रा मे नासाग्र पर केन्द्रित लगती है। होठ मोटे, नासिका मध्यम आकार माथा छोटा ग्रीवा साधारण से कुछ मोटी है। मार्शल का विचार है कि इसकी विशेषताओं के कारण यह किसी व्यक्ति विशेष की आकृति न होकर किसी जाति की रूपित करती है। परवर्ती काल में भी शाल ओढे मूर्तियां विशेषतः बोधिसत्य जैसी शाल पर उभरा हुआ तिपत्तिया अलंकरण प्रतिमा में किया गया है। बाशम तो इसे मंगोल जाति के व्यक्ति की आकृति का रूपांकन

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

मानते है। लेकिन मकाई का मानना है कि आखे मंगोला जैसी नहीं है। कान का सचित दिखना तथा मस्तक को ढालू दिखाना मेसोपोटामिया की मूर्ति कला से भिन्नता दिखाता है।

हड़प्पा के उत्खनन में विशिष्ट प्रकार की मुद्राए, ताम्र पट्ट प्राप्त हुए है। इनमें से अधिकांश पर लेख, पशु आकृतियां अंकित है। अधिकांश में चित्र लिपि है जो उसे लेक 8 अक्षरों की है। इस पर लिखि लिपि अभी पढो नहीं जा सकी है।

गार्डन चाइल्ड का यह कथन कि सिन्धु सभ्यता को अन्य सभ्यताओं से जोड़ने के बजाय उसकी अलग विशिष्टता दर्शाना उचित होगा, ज्यादा उपयुक्त लगता है।

उक्त के अतिरिक्त और भी बहुत सारे प्रमाण हैं जिन्हे किसी अन्य सभ्यता से जोडे जाने के बजाये स्वतन्त्र रूप से वि" लेशण किये जाने की आव" यकता है। सबसे महत्वपूर्ण हडप्पा की लिपि का पढ़ा जाना, वस्तुतः उसके प" चात ही अन्सुल्झे प्र" नों के उत्तर मिलने की संम्भावना होगो है।

ग्राम–कुर्था, जिला–कानपुर

ग्राम–कुर्था, जिला–कानपुर